पाठ 18. मियाँ गुमसुम और बत्तोरानी

पाठ की भूमिका

इस पाठ का उद्देश्य बच्चों में प्रभावी संप्रेषण संबंधी कौशल विकसित करना है ताकि वे शाब्दिक और गैर-शाब्दिक रूप से अपने विचार व्यक्त करने में समर्थ हो सकें। यह पाठ दो पात्रों के बीच हास्य-व्यंग्य से भरपूर माहौल में हो रहे संवादों पर आधारित एकांकी है। मुहावरों को इस प्रकार वार्तालाप में पिरोया गया है कि बच्चे इसे पढ़कर गुदगुदाएँ भी और कुछ सीखें भी।

पाठ का सार

मियाँ गुमसुम या तो चुप रहते हैं या फिर बोलते हैं तो अटपटी बातें। उन्हें मुहावरेदार बातें समझ में नहीं आती हैं। वे उन मुहावरों में प्रयुक्त शब्दों का शाब्दिक अर्थ ही समझ पाते हैं। बत्तोरानी बातूनी हैं और बात-बात पर मुहावरे बोलती हैं। हलके-फुलके अंदाज में ही बत्तोरानी मुहावरों का अर्थ भी समझाती हैं।

अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  बच्चों से नाटक के दोनों पात्रों के बारे में व उनके व्यक्तित्व के बारे में चर्चा करें। नाटक को अलग-अलग अंशों में बाँटकर बच्चों से पढ़वाएँ। उनके हाव-भाव व बलाघात आदि पर विशेष ध्यान दें। मुहावरों के अर्थ साथ-साथ बताते जाएँ। उन मुहावरों से वाक्य बनाकर मौखिक रूप से सुनाने को कहा जा सकता है। बच्चों से इस पाठ का कोई अन्य शीर्षक बताने को कहें।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पठित परिच्छेद** व **पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 65** देखें।
  - **भाषा आधारित प्रश्नों** का उद्देश्य हिंदी भाषा के व्याकरण-पक्ष को सुदृढ़ करना है।
  - बच्चे लिंग व उनके भेद से परिचित हैं। दिए गए शब्दों का वाक्य में प्रयोग करवाने से लिंग की पहचान करने में आसानी रहेगी।
  - प्रेरणार्थक क्रियाओं के बारे में बच्चे परिचित हैं। प्रेरणार्थक क्रियाएँ जिन सामान्य क्रियाओं से बनी हैं, उनकी पहचान करवाएँ।
  - मुहावरे भाषा को रोचक बनाते हैं। ये अपने शाब्दिक अर्थ को छोड़कर विशेष अर्थ देते हैं।
- **क्रियाकलाप के लिए संकेत**
  - इस क्रियाकलाप को करने में बच्चों की सहायता करें। मुहावरों का खेल खेलने में कक्षा में शोर न हो, इसका ध्यान रखें।